इच्छा प्राप्ति के लिए - लगन की अग्नि

जब तक हृदय में किसी वस्तु को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा (कामना) उत्पन्न नहीं हो, वह प्राप्त नहीं होती। इस विश्व में केवल मनुष्य ही नहीं प्रत्येक जीव-जन्तु कामना के वशीभूत होकर ही क्रिया करते हैं। जिनकी इच्छा जितनी प्रबल होती है, उनकी क्रिया भी उतनी ही शक्तिशाली होती है। इसलिए यह लक्ष्य प्राप्ति की सफलता का सबसे बड़ा कारक तत्व है। यही वह बीज है जो सफलता के लिए प्रेरित करता है। दृढ़ इच्छा नहीं हो या उसमें प्रबलता नहीं हो तो लक्ष्य के प्रति आकर्षण नहीं होता। ऐसी स्थिति में आवश्यक क्रिया ही नहीं होगी, फिर सफलता प्राप्त करने

का प्रश्न ही नहीं उठता।

कई बार यहाँ शंका उत्पन्न होती है, जो लोग भारतीय दर्शन के अनुगामी हैं, वे कह सकते हैं कि हमारे विचारकों ने तो `कामना' को त्यागने की बात कही है और आप बता रहे हैं कि सफलता के लिए `कामना' को प्रबल करो।

यहाँ एक भ्रम है। भारतीय विचारकों ने तुच्छ कामनाओं को त्यागने की बात कही है, न कि किसी बड़े उदात्त लक्ष्य की कामना को। परमात्मा का ज्ञान भी `कामना' की प्रबलता से ही प्राप्त होता है। इसलिए `कामना' का सर्वथा त्याग नहीं किया जा सकता। भगवान कहते हैं कि कल की कामना का परित्याग करो, किन्तु कर्म तो सदा फल की ही कामना से होता है। यहाँ हमने ही गलत समझा है। गीता में बताये मार्ग को देखें व समझें तो भगवान के कथन का अर्थ कर्म के परिणाम की चिन्ता को त्यागना है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जाये तो भगवान ने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किये गये कर्म को महत्व दिया है। कर्म मनुष्य के हाथ में है, परिणाम नहीं। यदि वह परिणाम की चिन्ता में डूबकर कर्म करेगा तो कर्म के प्रति उसकी एकाग्रता समाप्त हो जाएगी और वह फल के चिन्तन में ही लिप्त हो जाएगा। इस प्रकार वह कभी लक्ष्य भेद नहीं कर पायेगा। दूसरी हानि इससे यह है कि कर्म को कर्त्तव्य समझकर न करके यदि सफलता के लिए चिन्तन करते हुए किया जाता है तो असफलता भारी दुःखदायी हो जाती है। फल का चिन्तन अनेक शंकाओं एवं निरर्थक भावों को खड़ा कर देता है और मनुष्य पलायन-वादी रास्ता अपना लेता है, जैसा कि युद्ध के समय अर्जुन ने अपना लिया था।

इसलिए लक्ष्य की प्राप्ति के लिए `प्रबल कामना, (प्रबल इच्छा), का होना अत्यंत आवश्यक है। ध्रुव के मन में सौतेली माँ से परमात्मा के बारे में सुनकर उनसे मिलने की प्रबल कामना न उत्पन्न हुई होती तो उन्हें परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। विश्वामित्र के मन में वशिष्ठ के लिए प्रतिद्वन्दिता के कारण ऋषि बनने की प्रबल कामना न उत्पन्न होती तो वे ऋषि विश्वामित्र के रूप में अमर नहीं होते। बुद्ध के मन में संसार के दुःखों को देखकर उसके कारण को जानने की प्रबल कामना उत्पन्न नहीं होती तो उन्हें ज्ञानबोध कभी नहीं होता। राइट्स बंधुओं ने चिड़िया को हवा में उड़ते देखकर इंसान के भी आकाश में उड़ने की कामना न की होती तो वे हवाई जहाज के निर्माण की बात सोचते भी नहीं। महात्मा गांधी ने अफ्रीका में ब्रिटिश हुकूमत से अपमानित होकर गुलामी की पीड़ा को महसूस न किया होता तो उनके मन में स्वतंत्रता की गहरी कामना नहीं जागती और वे भारत के राष्ट्रपिता नहीं कहलाए जाते।

बड़ी बातों को जाने दें। इच्छा के बिना आपकी अंगुली तक नहीं हिलेगी। कामना जगी, पर उसमें प्रबलता नहीं, तो भी नहीं हिलेगी। भारतीय दर्शन कहता है कि इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति ही परमात्मा की कामना (इच्छा) से हुई है। इसलिए हर कर्म कामना पर ही निर्भर करता है।

अतः लक्ष्य कोई भी हो, आपके अंतःकरण में उसकी प्रबल इच्छा का होना आवश्यक है। तभी आपको सफलता प्राप्त होगी।

इच्छा की प्राप्ति के लिए कई कारण हैं

इच्छा का जन्म अनुभूतियों से होता है - इच्छा की उत्पत्ति अचानक नहीं हो जाती। इसकी उत्पत्ति का कोई न कोई कारण होता है। पश्चिमी विचारक `इच्छा' की उत्पत्ति का कारण प्रेरणा को मानते हैं। लेकिन प्रेरणा की उत्पत्ति हमेशा अनुभूति के अंकुरित होने के बाद उत्पन्न होती है। मान लीजिए कि आप किसी वृक्ष पर सुंदर फल देखते हैं। आपके अंदर स्थित यंत्र में एक प्राकृतिक क्रिया उत्पन्न हो जाती है। आँख, कान, नाक से उस फल के स्वरूप से आप उसे अनुभव करते हैं। संकेत मस्तिष्क को मिलता है। वह अपने संचित ज्ञान कोष से विश्लेषण करके उस फल की पहचान स्थापित करता है कि वह `आम' है और पका हुआ है। इस अनुभूति के बाद उस फल को खाने के स्वाद का स्मरण होता है और तब उसको प्राप्त करके खाने की कामना जागती है। यह कामना ही कर्म की ओर प्रेरित करती है और लक्ष्य की स्थापना करती है।

यहाँ हमने देखा कि पहले अनुभूति होती है, फिर स्वाद का स्मरण होता है, फिर कामना जागती है। यहाँ कामना के लिए स्वाद की अनुभूति `प्रेरणा' बन जाती है। प्रत्येक क्रिया में, प्रत्येक कामना में यही प्रक्रिया उत्पन्न होती है।

इच्छा को प्रबल कैसे करें - (1) अपने आपको असमर्थ या दीन-हीन समझकर अपनी इच्छाओं एवं कल्पनाओं को उपेक्षित न करें। (2) उच्च लक्ष्य की कामना करें और उनके साकार होने पर प्राप्त होने वाले सुख की अनुभूति मानसिक रूप से करें। (3) सकारात्मक सोच रखें। (4) निराशा-जनक तर्कहीन कल्पनाएं न करें। (5) उच्च एवं उदात्त कल्पनाओं को सफल व्यक्तियों की सफलता के दृष्टिकोण से देखें। असफल लोगों को अपने परीक्षण का आधार न बनायें। (6) असम्भव इस विश्व में कुछ भी नहीं है, पर व्यावहारिक तर्कों का पालन आवश्यक होता है। उच्च व श्रेष्ठ लक्ष्य एक-एक सीढ़ी चढ़कर प्राप्त किया जाता है। यह सोचें कि जब मनुष्य हिमालय की ऊँची चोटियों पर चढ़ सकता है, समुद्र में गोते लगाकर रत्नों को निकाल सकता है, तो आप किसी कामना की पूर्ति क्यों नहीं कर सकते! (7) अपनी श्रेष्ठ इच्छा को कभी विस्मृत न करें और उसे जीवन का उद्देश्य बनाएं।

इच्छापूर्ति की लगन दिशात्मक बल है

सफलता का बहुत महत्वपूर्ण कारक इच्छापूर्ति की लगन है। यह एक प्रमुख कारक तत्व है, जिसका पश्चिमी विचारकों ने कोई विशेष महत्व नहीं दिया है। भारतीय विचारकों के अनुरूप ` भाव की गहनता में डूबे बिना न कोई सिद्धि मिलती है, न परमात्मा'। जब तक मनुष्य भाव में स्वयं के अनुभूति अस्तित्व को मिटा नहीं देता, वह कोई भी ज्ञान, कोई भी सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता।

आपमें कोई इच्छा उत्पन्न हुई, पर उसके प्रति गहन भाव नहीं तो आपका मस्तिष्क उसे निरर्थक समझकर छोड़ देगा, उस इच्छा का कोई महत्व नहीं रहेगा।

एक आलसी छात्रा थी। उसे उपन्यास, सिनेमा, सहेलियों के साथ घूमना और खूब सोना अच्छा लगता था। वह इसी में लिप्त रहती थी। जब परीक्षा नज़दीक आ गई तो उसके मन में भय उत्पन्न हुआ कि वह अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण नहीं हो पायेगी। उसने संकल्प किया कि वह अब खूब पढ़ेगी। सुबह तीन बजे उठकर पढ़ाई करेगी और दो महीने में वह कोर्स पूरा कर लेगी। लेकिन जब सुबह अलार्म बजा तो नींद का सुख उस पर हावी था। उसने सोचा कि सुबह उठकर भी वह दो घंटे पढ़ सकती है। वह पुनः सो गई। सुबह जब वह तैयार होकर पढ़ने बैठी, तभी रेडियो में उसका मनपसंद गीत आने लगा उसने पढ़ने का काम रात के लिए टाल दिया। दिन में कॉलेज गई, दो-तीन पिरीयड के बाद दो सहेलियाँ अमिताभ बच्चन की नयी फिल्म देखने का प्रोग्राम लेकर आयीं और वह उनके साथ फिल्म देखने चली गयी। रात में उसे एक उपन्यास मिल गया और वह उसे पढ़ने लगी।

इस प्रकार दिन गुज़रते गये, पर वह पढ़ाई प्रारंभ नहीं कर पायी और आखिरकार वह परीक्षा में फेल हो गयी। जब फेल हो गयी तो उसे घर, समाज, कॉलेज तथा सखियों के बीच एक तिरस्कार का सामना करना पड़ा। फिर अचानक ही उसका काया-कल्प हो गया। घूमना, सिनेमा, उपन्यास, सहेलियां, नींद, इन सबमें उसका आकर्षण समाप्त हो गया। उसकी सारी भावनाएं पढ़ाई पर केन्द्रित हो गयीं। और जब अगले साल परिणाम निकला तो उसने उस परीक्षा के युनिवर्सिटी रिकॉर्ड को तोड़ डाला था। वह युनिवर्सिटी में टॉप पर ही नहीं बल्कि उस युनिवर्सिटी की रिकॉर्ड ब्रेकर बन गयी।

एक बात तो इस चरित्र से स्पष्ट होती है कि कामना का उत्पन्न हो जाना ही सब कुछ नहीं है। उसके प्रति इतना आकर्षण भी चाहिए कि अन्य सभी आकर्षण गौण हो जायें। इसी को भाव की गहनता कहते हैं। यह इच्छा के लिए उत्प्रेरक का काम करती है और लगन को जन्म देती है। यह `लगन' ही मनुष्य से कर्म करवाती है और उसे सफलता प्राप्त होती है। बिना इसके कठोर परिश्रम से किया गया कार्य भी सिद्ध नहीं होता।

- ब्र.कु.अल्का,दिल्ली

पटियाला-पंजाब। कला एवं संस्कृति प्रभाग के कार्यक्रम में सांसद डॉ. धर्मवीर गांधी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कुसुम,नेशनल कोऑर्डिनेटर,आर्ट एंड कल्चर विंग व ब्र.कु. शांता,सेवाकेन्द्र संचालिका।

दिल्ली-दिलशाद गार्डन। विधान सभा स्पीकर राम निवास गोयल एवं उनकी धर्मपत्नी के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. इन्द्रा।

बहादुरगढ़-हरियाणा। सेवाकेन्द्र पर आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के अंतर्गत सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अरुणा,मिडल इस्ट कन्ट्री सेंटर्स इंचार्ज।

दिल्ली-कालकाजी। वेलफयर एसोसिएशन के प्रेसीडेंट कमल अरोड़ा ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू के सेवाकेन्द्र आने पर गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. सुजाता।